ੴ

SIKHS IN INDIA

KIRTAN SOHILA
in
Hindi

https://Sikhsinindia.com
Email: sikhsinindia@gmail.com

सोहिला राग गौड़ी दीपकी महला पहला

ੴ सतगुर प्रसाद ॥

जै घर कीरत आखीऐ करते का होए बीचारो ॥ तित घर गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभौ का सोहिला ॥ हौं वारी जित सोहिलै सदा सुख होए ॥१॥ रहाओ ॥ नित नित जीअड़े समालीअन देखैगा देवणहार ॥ तेरे दानै कीमत ना पवै तिस दाते कवण सुमार ॥२॥ संबत साहा लिखिया मिल कर पावहु तेल ॥ देहु सजण असीसड़ीआ ज्यों होवै साहिब सियों मेल ॥३॥ घर घर एहो पाहुचा सदड़े नित पवंन ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंन ॥४॥१॥

राग आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुर एको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै घर करते कीरत होए ॥ सो घर राख वडाई तोए ॥१॥ रहाओ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरज एको रुत अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

राग धनासरी महला १ ॥ गगन मै थाल रव चंद दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूप मलआनलो पवण चवरो करे सगल बनराय फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती होय ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाओ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कौ सहस मूरत नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥

सभ महि जोत जोत है सोए ॥ तिस दै चानण सभ महि चानण होए ॥ गुर साखी जोत परगट होए ॥ जो तिस भावै स आरती होए ॥३॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही प्यासा ॥ कृपा जल देहि नानक सारिंग कौ होए जा ते तैरै नाए वासा ॥४॥३॥

राग गौड़ी पूरबी महला ४ ॥ काम क्रोध नगर बहु भरिया मिल साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरब लिखत लिखे गुरु पाया मन हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ कर साधू अंजुली पुन वडा हे ॥ करि डंडौत पुन वडा हे ॥१॥ रहाओ ॥ साकत हरि रस साद न जाणिआ तिन अंतर हौमै कंडा हे ॥ ज्यों ज्यों चलहि चुभै दुख पावहि जमकाल सहहि सिर डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नाम समाणे दुख

जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरख पाया परमेसर बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राख राख वड वडा हे ॥ जन नानक नाम अधार टेक है हरि नामे ही सुख मंडा हे ॥४॥४॥

राग गौड़ी पूरबी महला ५ ॥ करौ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाट चलहु हरि लाहा आगै बसन सुहेला ॥१॥ औध घटै दिनस रैणारे ॥ मन गुर मिल काज सवारे ॥१॥ रहाओ ॥ इहु संसार बिकार संसे महि तरिओ ब्रहम ज्ञानी ॥ जिसहि जगाए पीआवै इहु रस अकथ कथा तिन जानी ॥२॥ जा कौ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घर महल पावहु सुख सहजे बहुर न होएगो फेरा ॥३॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दास

इहै सुख मागै मो कौ कर संतन की धूरे ॥४॥५॥